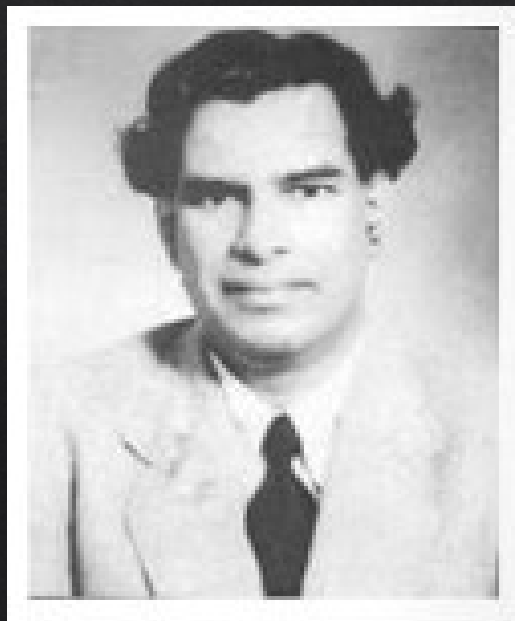


लोकगीत

भगवतशरण उपाध्याय



मुख्य बिंदु

लोकगीत अपनी लोच, ताज़गी और लोकप्रियता में शास्त्रीय संगीत से भिन्न है।

लोकगीत के लिए किसी साधना की आवश्यकता नहीं।
लोकगीत साधारण ढोलक, करताल, झाँझ, बाँसुरी की मदद से गाए जाते हैं।

लोकगीत में सभी त्योहारों और विशेष अवसरों का गीत है।

वास्तविक लोकगीत देश के गाँवों और देहातों में है।

लोकगीत के बहुत प्रकार हैं जैसे— कहरवा, बिरहा, बिदेशिया, आल्हा, साहर, बानी आदि है।

लोकगीत पूरे देश का संगीत है।

लोकगीत के सभी प्रांतों के अपन—अपने विद्यापति है।

पाठ का सार

‘लोकगीत’ पाठ भगवतशरण उपाध्याय द्वारा रचित है। जिसमें लोकगीतों के महत्व को बताया गया है। ये गीत मनुष्यों के मनोरंजन का भी मुख्य साधन है। लोकगीत जनता के गीत हैं जो हर घर, गाँव, नगर में गाए जाते हैं। इसे गाने के लिए किसी साधन की आवश्यकता नहीं है। ये सीधे जनता का संगीत है जो हर अवसर पर गाए जा सकते हैं। ये गीत शास्त्रीय संगीत से अलग है। अब लोकगीत और लोक साहित्य पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। लोकगीत कई प्रकार के हैं— आदिवायियों के गीत बड़े ही प्रभावी ओजस्वी और सजीव होते हैं। यह प्रांत के अपने गीत हैं। जैसे—पहाड़ी, कजरी, चैता, हीर—रांझा बिदेसिया। आज लोकगीतों के अपने—अपने क्षेत्र के विद्वान हैं जो निरंतर इस क्षेत्र में काम कर रहे हैं।